SJIF 2013 = 1.795
An International Peer Reviewed & Referred
Scholarly Research Journal for
Humanity Science & English Language

हरियाणा में महिला शिक्षा क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान

निर्देशक

डॉ०. बिलोश देवी
(एम.एड., पीएच. डी. शिक्षा)
Asst. Professor
अरावली शिक्षक प्रशिक्षण
महाविद्यालय, कारोता, नारनौल

शोधार्थी

रणधीर — १३०६०७५१२१
व्याख्याता भारतीय शिक्षक
प्रशिक्षण महाविद्यालय,
डाबला, सीकर (राजस्थान)

Abstract

भक्त फूल सिह का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान और गुरूकुल प्रणाली—१९ वीं शताब्दी तक हरियाणा के स्त्री पुरूष शिक्षा से कोसों दूर थे और युवाओं का कोई मार्गदर्शक नहीं था।

इस प्रकार भक्त फूल सिंह ने यह विचार किया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों के पठन—पाठन के लिए एक विद्यालय स्थापित किया जाये तथा अपनी योजना को कार्यान्वित करने के लिए ब्रह्मनन्द जी को बताया तो ब्रह्मनन्द जी ने विद्यालय खोलने की बजाय गुरूकुल खोलने का सुझाव दिया कि गुरूकुलों में छोटे—छोटे बालक जब उत्तम शिक्षा प्राप्त कर संसार में काम करेंगें तो वे अधिक सफल सिद्ध होंगें क्योंकि छोटे बच्चों में ही उत्तम संस्कार डाले जा सकते है। इस प्रकार भक्त फूल सिंह ने गुरूकुल खोलने का निश्चय किया।

भक्त जी ने अपने कार्य को पूरा करने के लिए लोगों से सहायता करने की अपील की कि वे गुरूकुल के लिए उत्तम स्थान दिलाने का कष्ट करें। इसके बाद भक्त जी आर्य जनों के साथ पास के बड़े गांव भैंसवाल कला में गये। वहां गांव के सब लोगों को इक्कठा करके गांव के जंगल में गुरूकुल खोलने के लिए कहा। प्राय: गांव के सभी लोगों ने भक्त जी के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

भक्त फूल सिह का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान और गुरूकुल प्रणाली— १९ वीं शताब्दी तक हरियाणा के स्त्री पुरूष शिक्षा से कोसों दूर थे और युवाओं का कोई मार्गदर्शक नहीं था।

इस प्रकार भक्त फूल सिंह ने यह विचार किया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों के पठन—पाठन के लिए एक विद्यालय स्थापित किया जाये तथा अपनी योजना को कार्यान्वित करने के लिए ब्रह्मनन्द जी को बताया तो ब्रह्मनन्द जी ने विद्यालय खोलने की बजाय गुरूकुल खोलने का सुझाव दिया कि गुरूकुलों में छोटे—छोटे बालक जब उत्तम शिक्षा प्राप्त कर संसार में काम करेंगें तो वे अधिक सफल सिद्ध होंगें क्योंकि छोटे बच्चों में ही उत्तम संस्कार डाले जा सकते है। इसलिए आर्य गुरूकुल कांगड़ी की तरह हरियाणा में भी आदर्श गुरूकुल खोजिए। इसी से आर्य जाति का कल्याण सम्भव हो सकता है। इस प्रकार भक्त फूल सिंह ने गुरूकुल खोलने का निश्चय किया।

भक्त जी ने अपने कार्य को पूरा करने के लिए लोगों से सहायता करने की अपील की ि कवे गुरूकुल के लिए उत्तम स्थान दिलाने का कष्ट करें। इससे आंवली गांव के लोग स्थापित हुए और भक्त जी को पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया। इसके बाद भक्त जी आर्य जनों के साथ पास के बड़े गांव भैंसवाल कला में गये। वहां गांव के सब लोगों को इक्कठा करके गांव के जंगल में गुरूकुल खोलने के लिए कहा। प्राय: गांव के सभी लोगों ने भक्त जी के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा १९१९ ई०. में गुरूकुल विद्यापीठ भैंसवाल, कलां, हरियाणा की स्थापना करवाई गई। २३ मार्च १९२० को गुरूकुल का

प्रथम वार्षिक समारोह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ तथा इसी अवसर पर गुरूकुल की संचालन समिति बनाई गई।

टब भक्त जी के मन में एक विचार उत्पन्न हुआ कि बालकों की शिक्षा के साथ—साथ कन्याओं की शिक्षा का भी प्रबन्ध होना चाहिए। अत: सन् १९२८ ई. में जिला सोनीपत खानपुर गांव के जंगल में कन्या पाठशाला नींव रखी। जिसने आगे चलकर सन् १९३६ में कन्या गुरूकुल खानपुर कला का रूप धारण किया। इस कन्या गुरूकुल ने भक्त जी की मृत्यु के बाद उनकी पुत्री सुभाषणी जी व चौ. माडू. सिंह की अध्यक्षता में काफी उन्नति की। यह कन्या गुरूकुल वर्तमान में महिला विश्विद्यालय का रूप ले चुका है।

कन्या गुरूकुल खानपुर कलां के उद्देश्य

1.गुरूकुल पद्धति में वैदिक साहित्य, संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में शिक्षा देना। वर्णाश्रम व्यवस्था को पुर्नजिवित करना।

2. वैदिक धर्म के आदर्श अध्यापक, अध्यापिका तथा पुरोहित तैयार करना।

3. कन्याओं में समाज सेवा तथा स्वावलम्बन की भावना उत्पन्न करना।

4.गौरक्षा तथा शुद्धि प्रचार करना।

5. जनता में सामाजिक उत्तमता भरना तथा संकीर्ण साम्प्रायिकता को समाप्त करना।

6. अस्पृष्यता व छूआछूत की भावना को समाप्त करना।

7. नारी जाति में शिक्षा का प्रचार करना।

8. मेधावी निर्धन कन्याओं को नि:शुल्क शिक्षा देना।

9. धार्मिक उत्सवों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों का विनाश तथा श्रेष्ठ

10. विचार धारा की स्थापना करना।

11. गुरूकुल शिक्षा प्रणाली और आर्ष पाठविधि को प्रचलित करना।

12. महर्षि दयानन्द द्वारा बताये गये सिद्धान्तों पर बालिकाओं के गुरूकुल तथा अन्य शिक्षण संस्थाऐं स्थापित करना।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कौर रजिन्द्र, ''आर्य समाज का महिला षिक्षा में योगदान: एक अध्ययन'', लघु षोध प्रबन्ध, कुरूक्षेत्र विष्वविद्यालय कुरूक्षेत्र, २००४।

दुग्गल जनक, ''हरियाणा वूमैन ऑन दा मूव'', इनदिमेडंट स्टडी, एन.सी. ई. आर. टी., १९८९।

गुप्ता, डॉ०. एम०. पी०., ''हरियाणा प्रगति के पथ पर'', एस०. पी०. पब्लिकेषनस, मणिमाजरा, चण्डीगढ़, संस्करण २००१।

आर्य प्रतिनिधि संभा हरियाणा का साप्ताहिक पत्र, ''सर्तहितकारी'' आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, रोहतक, ७ फरवरी २००४।

आर्य प्रतिनिध सभा हरियाणा का साप्ताहिक पत्र, ''आर्य जगत'', आर्य समाज भवन, नई दिल्ली, १८ से २४ जनवरी २००४।

विवरण पत्रिका, ''कन्या गुरूकुल, बचगांवा (गामड़ी) कुरूक्षेत्र'', कन्या गुरूकुल प्रबन्ध समिति, २००४।

पत्रिका, वेदवाणी, ''वैदिक महिला विषेशांक'', वेदवाणी कार्यालय, रेवली (सोनीपत), नवम्बर, २००५।

पत्रिका, ''समारिका'', गुरूकुल कुरूक्षेत्र, नवम्बर २००१।

षर्मा, आर, ए, ''षिक्षा अनुसंधान'', सूर्या पब्लिकेषन, मेरठ, २००३।

कोठारी, सी, आर., ''रिसर्च मेथ्डोलॉजी, मैथडज एण्ड विकास विष्वा प्रकाषन, नई दिल्ली, २००१।